9. विचार कला और निर्माण कला

(The Art of Thinking and Creating)

विचार भी एक बहुत बड़ी शक्ति है। जिसे विचार करने का ढंग आता है, वह हर बात का कोई-न-कोई हल निकाल लेता है। जड़ और चेतन में यही तो अन्तर है कि चेतन में विचार शक्ति होती; सोचने, समझने और उसमें सुधार करने का संकल्प होता है। अतएव चिन्तन ही जीवन है। अर्केमेडीस (Archmedes) जोकि एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक हुआ है, ने कहा है, ''मुझे एक बहुत बड़ा डण्डा दो, जो कि बहुत मज़बूत भी हो, तो मैं पृथ्वी को उस द्वारा हिला दूँगा।'' ऐसा डण्डा वास्तव में विचार ही है क्योंकि समय-समय पर जिस विचार अथवा वाद ने संसार में ज़ोर पकड़ा है, उसने ही संसार को हिलाया है। फिर, आप देखेंगे कि संसार में जितना भी निर्माण-कार्य हुआ है, उसके लिए पहले विचार उत्पन्न हुआ अथवा विचार किया गया है। संसार में सारी चहल-पहल, सभी वस्तुयें सभी परिणाम विचार के ही फल हैं। देखिये तो, विचार पर इस संसार का कितना आधार है! इसलिए मनुष्य का मूल्याँकन करने वालों ने कहा है कि ''मनुष्य के जैसे विचार होते हैं वैसा ही उसका आचार होता है'' और उन्होंने जीवन की उच्चता की परिभाषा करते हुए कहा है कि ''सादा जीवन और उच्च विचार ही मनुष्य की महानता का मापदण्ड है।'' आप इस बात को मानेंगे कि जो मनुष्य विचार नहीं कर सकता, उसका जीवन भेड़चाल की तरह अथवा निर्जीव-सा हो जाता है। जो विचारक होता है, वह कोई नयी योजना बनाता, नयी ईजाद (Invention) करता, नया ज्ञान-रत्न संसार को देता और किसी समस्या का हल बताकर जन-जीवन को उबारता है। जो लोग विचार-कुशल हैं, आज वे ही संसार में सिरमौर अथवा वी.आई.पी. (V.I.P.) बने हुए हैं। जिस जाति, समाज, देश अथवा संस्था में अच्छे विचारक नहीं हैं, वे पिछड़ गये हैं। जिनका विचार नहीं चलता वे 'जड़मति' अथवा 'पिछड़े हुए' कहलाते हैं, उनकी प्रगति रुक जाती है, वे जीवन-क्षेत्र में अनुभव-रत्न प्राप्त नहीं कर पाते। अतः विचार भी एक बहुत बड़ी कला है। फिर कई लोगों का विचार सीधी रेखा पर चलता है। वे सोचने, निर्णय करने तथा निष्कर्ष पर पहुँचने का तरीका जानते हैं। कई लोगों की विचार-शक्ति बिखरी होती है। उसका कोई केन्द्र-बिन्दु नहीं होता, लक्ष्य नहीं होता और अन्य कई कुतर्क एवं विरोध-भाव से रंगकर विचार करते हैं। उनकी विचार-शैली लाभकारी नहीं होती। अतः चढ़ती कला ही वास्तव में कला है। उद्दण्ड, अनियन्त्रित एवं विकारयुक्त विचार-शक्ति ही हानिकारक है।

इस कला के लिए किन गुणों को धारण करना ज़रूरी है?

ध्यान देने पर आप देखेंगे कि इस कला में निपुणता प्राप्त करने के लिए निम्न गुणों का होना अत्यावश्यक है— (1) सुनी हुई बात पर मंथन (2) आगे बढ़ने का संकल्प अथवा जीवन में कोई उच्च कार्य करने का ध्येय (3) समय को मूल्य देने का स्वभाव (4) मन की एकाग्रता (5) दृष्टिकोण की विशालता (6) मन की निर्मलता (Flawlessness) (7) विचारों को अर्द्धविराम (कोमा, Coma), पूर्ण विराम (फ़ुलस्टाप, Fullstop), प्रश्न-चिह्न (Question mark), आश्चर्यवाचक चिह्न (Sign of Exclamation) को यथा-स्थान अथवा यथा-समय लगाने की योग्यता (8) शक्ति का अपव्यय न करने का स्वभाव (9) नये-नये प्रयोग, तजुर्बे अथवा साहसी कार्य करके नये क्षेत्र में प्रवेश करने का गुण (10) एकान्त-प्रेम।

स्पष्ट है कि जो मनुष्य बात की गहराई में जाता है, मंथन करता है, उसे ही मोती मिलते हैं। कहावत भी है कि ''उन्हाँ कमाइयाँ पाइयाँ जिन गहरे पानी पैठ।'' इसके अतिरिक्त, जीवन में आगे बढ़ने का भी कुछ योग्य ध्येय होना चाहिये। मनुष्य का विचार चलना शुरू ही तब होता है जब वह पुरानी स्थिति अर्थात् वर्तमान अवस्था (Status Quo) को छोड़कर कुछ उन्नति करने का संकल्प करता है। तब ही उसके मन में प्रश्न उठता है कि क्या करूँ, कैसे करूँ...? ये प्रश्न उठने से ही उसका विचार-मंथन होता है, तभी वह कोई नया विचार संसार के आगे रखता है अथवा कोई नयी योजना बनाता, नया विधि-विधान बनाता या किसी नयी, उपयोगी अथवा रंजनकारी वस्तु का निर्माण करके स्वयं भी ख़ुशी प्राप्त करता है तथा समाज के पास भी उसकी कोई चिरस्थाई देन रह जाती है। जो लोग अपने जीवन में कोई उच्च अथवा विशेष कार्य करने का ध्येय ही नहीं अपनाते, जो यथा वर्तमान स्थिति (Status Quo) ही चाहते हैं, वे आलस्य और विलासिता में ही जीवन समाप्त कर देते हैं। वे भोगप्रिय व्यक्ति, उन्नति के शिखर पर नहीं पहुँच पाते, समाज के आगे कोई नयी कृति, नयी प्रणाली, नयी युक्ति नहीं रख पाते बल्कि लकीर को पीटते ही दिन काट देते हैं। फिर, जो समय को मूल्य नहीं देता वह तो अपने जीवन के बहुत-से अनमोल क्षण, स्वर्णिम अवसर, सुहावने दिन, अनुकूल परिस्थितियाँ यों ही गँवा देता है। जो अपनी विचार-शक्ति को किसी एक केन्द्र पर एकाग्र करने की बजाय उसे बिखेर देता है, वह उस मानव की तरह है जो एक स्थान पर 20 फुट गहरा खोदकर, कुँआ बनाकर पानी प्राप्त करने की बजाय, बीस जगह केवल एक-एक फुट गहरे खड्डे खोद देता है। पुनश्च, जिसका दृष्टिकोण विशाल होता है, विचार-क्षेत्र विस्तृत होता है, वह संकीर्णताओं में नहीं फँसा रहता है, बँधा हुआ-सा नहीं अनुभव करता है, अपने सामने द्वार बन्द नहीं पाता है बल्कि विशाल मानव-समूह को सामने रखकर बड़ा-बड़ा विचार करता है तथा स्थान, वातावरण और जाति-पाति की सीमा से ऊँचा उठकर सोचता है। इसके अतिरिक्त, आप यह भी देखेंगे कि जिसका मन निर्मल होता है, व्यसनों, वासनाओं, कुटिलताओं तथा द्वेष-दोषादि से जितना रहित होता है उतना ही अधिक उसे विचारों के केन्द्रीकरण अथवा उनकी एकाग्रता के लिए सुविधा रहती है। इसी तरह विचार करने की कला में यह भी गुण शामिल है कि कहाँ पर रुकना है, कहाँ आगे सोचना है वरना निरंकुश होकर मनुष्य अपने ही विचारों की अविरल गति से स्वयं भी परेशान हो सकता है। विशेष बात यह है कि एकान्त में मनुष्य को चूँकि विचार-सागर मंथन करने में वातावरण की सहायता मिलती है, इसलिए यह गुण भी लाभदायक है। परन्तु कई परिस्थितियाँ भी विचार-उत्तेजक अथवा विचार-उत्पादक (Thoughts provoking) होती हैं, अतः वे भी विचार पैदा करने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं। अतएव ये सब गुण जिसमें हों, वह ही कुशल-विचारक अथवा विचार कला से सम्पन्न व्यक्ति होता है और वही नये-नये निर्माण भी कर सकता है।

परन्तु ये सभी गुण भी तभी आ सकते हैं जब मनुष्य योगाभ्यास करता है। योगाभ्यासी ही एकान्तप्रेमी, सरलचित्त, एकाग्रचित्त, उद्यमी और मंथन करने वाला होता है।

***